

भित्ति कला

हाल ही में चेरपुलास्सेरी (केरल) में गवर्नमेंट वोकेशनल हायर सेकेंडरी स्कूल की 700 फीट लंबी दीवार पर आधुनिक भित्ति कला की एक महान कृति 'वॉल ऑफ पीस' का उद्घाटन किया गया।



भित्ति चित्र की विशेषताएँ:

- भारतीय गुफाओं और महलों की दीवारों पर बने चित्र भित्ति चित्र कहलाते हैं।
- भित्ति चित्रों का सबसे पहला प्रमाण अजंता और एलोरा की गुफाओं, बाघ की गुफाओं एवं सतितनवासल की गुफाओं पर चित्रित सुंदर भित्ति चित्रों से प्राप्त होता है।
- **भित्ति चित्रों के सर्वाधिक प्रमाण** प्राचीन लिपियों और साहित्य में मिलते हैं।
 - वनिय पटिक के अनुसार - वैशाली की प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली ने अपने महल की दीवारों पर उस समय के राजाओं और व्यापारियों को चित्रित करने के लिये चित्रकारों को नियुक्त किया था।

भारतीय दीवार चित्रों की तकनीक:

- भारतीय दीवार चित्रों को बनाने की तकनीक और प्रक्रिया की चर्चा 5वीं/6वीं शताब्दी के एक संस्कृत ग्रंथ वषिणुधरमोत्तरम में की गई है।
- **सभी प्रारंभिक उदाहरणों में** इन चित्रों की प्रक्रिया एक जैसी प्रतीत होती है, अपवाद के रूप में तंजौर के राजराजेश्वर मंदिर जैसे चट्टानों की सतह पर भित्ति चित्र वधि द्वारा किया गया माना जाता है।
- अधिकांश रंग स्थानीय स्रत पर उपलब्ध थे।
- ब्रशों का निर्माण बकरी, ऊँट, नेवला आदि जानवरों के बालों से किया जाता था।
- ज़मीन को चूने के प्लास्टर की एक अत्यधिक पतली परत के साथ लेपित किया जाता था, जिस पर पानी के रंगों द्वारा चित्रों को बनाया जाता था।
- **वास्तविक भित्ति पद्धति में पेंटिंग तब की जाती है जब सतह की दीवार गीली होती है**, ताकि पेंट दीवार की सतह के अंदर गहराई तक जा सके।
- भारतीय चित्रकला के अधिकांश मामलों में चित्रकला की जसि अन्य पद्धति का पालन किया गया, उसे टेम्पोरा के रूप में जाना जाता है।
 - यह पेंटिंग की एक ऐसी वधि है जिसमें चूने की प्लास्टर वाली सतह को पहले सूखने दिया जाता है और फिर ताज़े चूने के पानी से भगीया जाता है।

- इस प्रकार प्राप्त सतह पर कलाकार रेखाचित्र बनाता है।
- **उपयोग में आने वाले प्रमुख रंग लाल गेरू, वशिद लाल (सदूर), पीला गेरू, गहरा नीला, लापीस लाजुली, लैम्प ब्लैक (काजल), चाक सफेद, टेरावर्ट और हरा थे।**

भक्ति चित्र:

- कलाकृतिका कोई भी हस्सिा है जिसे चित्रित किया जाता है अथवा सीधे दीवारों पर लगाया जाता है भक्ति चित्र कहलाता है।
- **भक्ति कला छत या किसी अन्य बड़ी स्थायी सतह पर अधिक व्यापक रूप से दिखाई देती है।**
- भक्ति चित्रों में आमतौर पर अंतरिक्ष के वास्तुकला संबंधी चित्रों को सामंजस्यपूर्ण रूप से शामिल किये जाने की वशिष्ट वशिषता होती है।
- भक्ति चित्रों के लिये कई तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है, जिनमें से भक्ति सिर्फ एक प्रकार है।
- इसलिये भक्ति दीवार पेंटिंग के लिये एक सामान्य शब्द है, जबकि फ्रिस्को एक वशिष्ट शब्द है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

प्रश्न. सुप्रसिद्ध पेंटिंग "बणी ठणी" कसि शैली की है? (2018)

- बूंदी शैली
- जयपुर शैली
- काँगड़ा शैली
- कशिनगढ़ शैली

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- **कशिनगढ़ शैली:**
 - बणी ठणी चित्रकला कशिनगढ़ शैली की है। भारतीय चित्रकला की कशिनगढ़ शैली (18वीं सदी) का उदय कशिनगढ़ (मध्य राजस्थान) रयिासत में हुआ।
- **काँगड़ा शैली:**
 - लगभग 18वीं शताब्दी के मध्य में नादरि शाह (वर्ष 1739) और अहमद शाह अबदाली (वर्ष 1744-1773) की सेनाओं ने मुगल राजधानी दलिली और आसपास के क्षेत्रों को लूट लिया। राजा गोवर्द्धन चंद (वर्ष 1744-1773) के संरक्षण में हरपुर-गुलेर में काँगड़ा चित्रकला शैली का जन्म तब हुआ जब उन्होंने मुगल शैली की पेंटिंग में प्रशिक्षित शरणार्थी कलाकारों को आश्रय प्रदान किया।
- **बूंदी शैली:**
 - बूंदी चित्रकला शैली का विकास 17वीं-19वीं सदी के बीच राजस्थान की बूंदी रयिासत और इसके पड़ोसी राज्य कोटाह (अब कोटा) में हुआ।
- **जयपुर शैली:**
 - चूँकि जयपुर (आमेर) रयिासत के शासकों का मुगलों के साथ घनषिठ संबंध था, 16वीं शताब्दी के अंत और 18वीं शताब्दी की शुरुआत के बीच वकिसति हुई इस कला में राजस्थानी शैली (जो 16वीं-17वीं शताब्दी के बीच कला शैली पर प्रभावी थी) और मुगल शैली दोनों के समकालिक तत्त्व वदियमान थे।

प्रश्न. कलमकारी पेंटिंग कसि संदर्भति करती है? (2015)

- दक्षिण भारत में सूती वस्त्र में हाथ से की गई चित्रकारी
- पूर्वोत्तर भारत में बाँस के हस्तशलिप पर हाथ से किया गया चित्रांकन
- भारत के पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में ऊनी वस्त्र पर ठप्पे (ब्लॉक-पेंट) से की गई चित्रकारी
- उत्तर-पश्चिमी भारत में सजावटी रेशमी वस्त्र में हाथ से की गई चित्रकारी

उत्तर: (a)

- कलमकारी दक्षिण भारतीय राज्यों तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके इमली की कलम से सूती या रेशमी वस्त्रों पर की जाने वाली हाथ की पेंटिंग की एक प्राचीन शैली है।
- कलमकारी शब्द फारसी शब्द से लिया गया है जहाँ 'कलम' का अर्थ है कलम और 'कारी' शलिप कौशल को संदर्भति करती है।
- इस कला में रंगाई, ब्लीचिंग, हैंड पेंटिंग, ठप्पे (ब्लॉक प्रटिंग), स्टार्चिंग, सफाई आदि के 23 कठनि चरण शामिल हैं।
- कलमकारी रूपांकनों में फूल, मोर और पैसले से लेकर रामायण एवं महाभारत जैसे पवतिर हद्वि महाकाव्यों के पात्र शामिल हैं।
- वर्तमान में यह कला मुख्य रूप से कलमकारी साड़ियों बनाने के लिये की उपयोग की जाती है। **अतः वकिलप (a) सही उत्तर है।**

प्रश्न. नमिनलखिति ऐतहिासकि स्थानों पर वचिार कीजयि: (2013)

1. अजंता की गुफाएँ
2. लेपाक्षी मंदिर
3. साँची स्तूप

उपर्युक्त स्थानों में से कौन-सा/से भित्तिचित्रों के लिये भी जाना जाता है/जाने जाते हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) 1, 2 और 3
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

अजंता की गुफाएँ:

- प्रारंभिक भित्तिचित्रों को बौद्ध कला के बाद के काल की नक्काशीदार भूमि पर किये गए चित्रण दीर्घाओं (galleries) के प्रोटोटाइप के रूप में माना जा सकता है, जैसा कि महाराष्ट्र में अजंता के चित्रित गुफा मंदिरों में है।
- एलोरा की गुफाओं में अजंता, बाग, सत्तिनवासल, अरमामलाई गुफा (तमलिनाडु), रावण छाया शैलाश्रय, कैलाशनाथ मंदिर की गुफाओं में भित्तिचित्र पाए जाते हैं। अतः 1 सही है।

लेपाक्षी मंदिर:

- दक्षिणी आंध्र प्रदेश के कुरुमासेलम (जो तेलुगू में कछुआ पहाड़ी शब्द का अनुवाद है) नामक एक नचिली चट्टानी पहाड़ी पर स्थिति लेपाक्षी मंदिर का निर्माण वरिपनना और वीरनना भाइयों द्वारा करवाया गया था, ये 1583 में वजियनगर शासकों के शासनकाल में सेवा में थे।
- यह अपने हैंगिंग कॉलम अथवा स्तंभ, एक अखंड नंदी/Monolithic Nandi (4.5 मीटर ऊँचा और 8.23 मीटर लंबा) तथा भित्तिचित्रों के बेहतरीन नमूनों के लिये प्रसिद्ध है।

साँची स्तूप:

- इसे तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया था, यह चार तोरण (सजावटी द्वार) के साथ बुद्ध के पुरावशेष पर निर्मित ईंट की अर्द्धगोलीय संरचना है।
- इसमें बुद्ध के जीवन से प्रेरित, पत्थर पर की गई नक्काशियाँ भी हैं और कई रस्सियों, मोतियों एवं रीलों के साथ एक केंद्र में एक पाल्मेट डिज़ाइन भी है। इसमें कोई भित्तिचित्र नहीं है। अतः 3 सही नहीं है।

प्रश्न. प्राचीन भारत में गुप्त काल के गुफा चित्रों के केवल दो ज्ञात उदाहरण हैं। इन्हीं में से एक है अजंता की गुफाओं के चित्र। गुप्तकालीन चित्रों का अन्य मौजूद उदाहरण कहाँ है? (2010)

- (a) बाग गुफाएँ
- (b) एलोरा की गुफाएँ
- (c) लोमस ऋषि गुफाएँ
- (d) नासकि की गुफाएँ

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- बाग गुफाएँ मध्य प्रदेश की वधिय पहाड़ियों में स्थित हैं। वे भारत में बौद्ध कला और वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। गुफाओं में चैत्य एवं वहार दोनों हैं। 5वीं-6वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान बाग गुफाओं का उत्खनन किया गया था, जो भारत में बौद्ध धर्म के बाद के चरणों के अनुरूप था।
- गुप्त काल को भारत में कला और वास्तुकला का स्वर्ण युग माना जाता है। गुप्त शासक कला, साहित्य और वद्वानों के महान संरक्षक थे। गुप्त साम्राज्य के शासनकाल के दौरान अजंता तथा एलोरा की गुफाओं को तराशा गया था। इनमें हट्टी और बौद्ध दोनों वषियों के चित्र हैं।
- लोमस ऋषि गुफा बहिर के बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियों में एक मानव निर्मित गुफा है। इसे तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य के अशोक काल के दौरान बनाया गया था।
- नासकि गुफाएँ 24 गुफाओं का एक समूह है, जो पहली शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान बनाई गई हैं। हीनयान बौद्ध धर्म में चल रहे परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करने के लिये 6वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान इसमें कुछ बदलाव किये गए थे।
- गुफाओं पर बने शिलालेख से पता चलता है कि स्थानीय व्यापारियों और सामंतों द्वारा किये गए दान के अतिरिक्त वभिन्न शासक राजवंशों ने गुफाओं के निर्माण में योगदान दिया है। गुफाओं पर वर्णित तीन शासक राजवंश- पश्चिमी क्षत्रप, सातवाहन और आभीर हैं। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

[स्रोत: द ह्रि](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/mural-art>

